

आओ, खुद देख लो ४

ज़िंदगी का पानी



एक दिन ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ सामरी इलाके में से गुज़र रिहा था। सामरी यहूदियों के दुश्मन थे। वह एक आबादी बनाम सूखार के बाहर रुके। ईसा मसीह लंबे सफ़र से चकनाचूर हो गया था। वह वहाँ पढ़े एक कुएं पर बैठ गया। उसके शागिर्द शहर में गए ताकि कुछ खाना ख़रीद लाएँ।

दोपहर के बारह बज गए थे।

तब एक सामरी औरत पानी भरने आई।

► सामरी कौन थे?

सामरी यहूदियों से मिलते-जुलते थे। वह भी खुदा की परस्तिश करते थे, लेकिन यहूदियों से अलग। दोनों क़ौमों के दरमियान स़क्ष नफ़रत थी।

भूले-भटके का प्यासा

आम तौर पर लोग सुबह-सवेरे और शाम को पानी भरने आते थे। लेकिन यह औरत बारह बजे कुएं पर आई।

► क्यों?

यह औरत बदनाम थी। यह गुनाह में उलझी हुई औरत थी। तो भी ईसा मसीह ने उससे बात की।

► क्या उसे पता नहीं था कि यह गुनाहगार औरत है?

ज़रूर। उसे खूब मालूम था।

► तो उसने औरत से बात क्यों की?

वह हर इनसान से मुहब्बत करता है चाहे वह कितना ही गुनाहगार क्यों न हो। वह तो हर इनसान की तलाश में रहता है। वह चाहता है कि हर एक पटरी पर वापस आए। कि हर एक खुदा का फरज़ंद बने। कि हर एक जन्म में दाखिल हो जाए।

► उसने क्या फ़रमाया? क्या उसने उसे झिड़की दी?

नहीं। उसने कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।”

कैसी बात! दुश्मन की गुनाहगार औरत से ऐसी बात!

औरत चौंक पड़ी। कहने लगी, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरखास्त कर सकते हैं?” हम भी यह सवाल पूछते हैं। मगर ईसा मसीह हम जैसा नहीं सोचता। वह औरत के दिल तक पहुँचना चाहता था, और वह जानता था कि इस सवाल से वह उसे अपनी तरफ खींचेगा।

► पानी माँगने का क्या मक्कसद था?

अगर वह खामोश रहता तो औरत से बात न छिड़ती। अगर वह झिड़की देता तो औरत की नफ़रत बढ़ जाती। पानी माँगने से उसने अपने आपको औरत के बराबर कर दिया। कितनी हलीमी!

► इतनी हलीमी क्यों?

इसलिए कि वह भूले-भटके का प्यासा है। वह चाहता है कि हर एक को नजात मिले।

आपको भी। मुझको भी।

ज़िंदगी का पानी

मगर पानी माँगने का एक और मक्क्सद भी है। वह एक बात छेड़ना चाहता है जिससे औरत को रुहानी ज़िंदगी मिले।

औरत के सवाल से शक टपक रहा है : आप तो यहूदी हैं। आप किस तरह पानी माँग सकते हैं? दाल में कुछ काला है।

फिर भी ईसा मसीह का मक्क्सद पूरा हो गया है। औरत उसकी बातें सुनने के लिए तैयार हो गई है। अब वह उसे सीधा असल बात तक ले जाता है। वह फ़रमाता है, “अगर तू उस बख़िश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।”

मतलब है, मेरे पास एक खुशखबरी है। ध्यान से सुन ले! खुदा तुझे एक चीज़ देना चाहता है। इसे माँग ले तो तुझे यह मिलेगी ज़रूर।

► क्या चीज़?

ज़िंदगी का पानी।

अब औरत मज़े से सुनने लगी है। वह कुछ मज़ाक़ में कहती है, “खुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? क्या आप हमारे बाप याकूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया?”

आप खुद पानी माँग रहे हैं क्योंकि कुआँ गहरा है। और आपके पास बालटी भी नहीं है। तो आप किस तरह इससे बेहतर पानी दे सकते हैं? कुएं का यह इंतज़ाम हज़ार सालों से ज़्यादा चलता आ रहा है, और हम भी इसका पानी इस्तेमाल करते हैं। आप इससे बेहतर इंतज़ाम किस तरह मुहैया कर सकते हैं?

ईसा मसीह इस हलके मज़ाक़ के जवाब में असल बात पर आ जाता है: “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

जो पानी तुझे याकूब से मिला है वह तेरी रुह की प्यास नहीं बुझा सकता। मगर जो पानी मैं तुझे देता हूँ उससे रुह की यह प्यास बुझ जाएगी। इतनी कसरत से पानी मिलेगा कि तुझमें चश्मा बन जाएगा। ऐसा चश्मा जिसका पानी अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।

► यह अबदी ज़िंदगी क्या चीज़ है?

कुएँ का पानी जिस्म की प्यास बुझा सकता है। मगर मसीह का पानी रुह की प्यास बुझाता है। कुएँ का पानी बार बार पीना पड़ता है, और तो भी आखिर में जिस्म खत्म हो जाता है। मसीह का पानी एक बार पी लिया तो रुह की प्यास बुझ जाती है और इनसान को अबदी ज़िंदगी मिलती है। यह पानी दिल में चश्मा बनकर इनसान को मौत के बाद भी ज़िंदगी दिलाता है।

► वाह! क्या हम सबको ऐसे पानी की ज़रूरत नहीं?

अब तक औरत को समझ नहीं आती। वह कहती है, “खुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

ज़ख्म का इलाज

लगता है कि औरत अब तक मुतमइन नहीं है। लगता है वह ईसा मसीह को ललकार रही है कि पहले वह कुछ कर दिखाओ जो तुम कह रहे हो। शायद वह यह भी सोच रही है कि क्या यह आदमी पीर है?

► क्या ईसा मसीह सिर्फ़ पीर है? जादूगर किस्म का आदमी?

नहीं। वह रुहानी डाक्टर है जो उसका इलाज करना चाहता है। वह कहता है, “जा, अपने खावंद को बुला ला।”

औरत बात टालकर कहती है, “मेरा कोई खावंद नहीं है।”

ईसा मसीह फ़रमाता है, “तूने सही कहा कि मेरा खावंद नहीं है, क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

ईसा मसीह कितनी महारत से अपनी रुहानी नश्तर से पीप से भरे ज़ख्म को खोल देता है।

► क्यों?

वह जानता है कि औरत को इलाज की ज़रूरत है। ज़िंदगी का यह पानी सिर्फ़ इस सूरत में मिल सकता है कि वह अपने गुनाहों को तसलीम करे। कि वह तौबा करे। गुनाह का इकरार शफ़ा का पहला क़दम है। तब ही ज़ख्म भरेगा। तब ही ज़िंदगी का पानी दिल में आ सकता है।

अब मज़ाक़ की कोई बात नहीं रही। औरत को सदमा आता है। हाय, इस अजनबी को सब कुछ मालूम है! वह कहती है, “खुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं।”

► क्यों?

यह अजनबी उसे उसके दिल की बातें खोलकर बताता है।

► कौन यह कर सकता है?

सिर्फ़ वह जो नबी है।

यरूशलम या गरिजीम?

लेकिन सामरियों के नज़दीक यहूदी काफिर हैं। यह अजनबी किस तरह नबी हो सकता है? इसलिए औरत आगे पूछती है, “हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

सामरी बैतुल-मुकद्दस को नहीं मानते थे। वह क़रीब के पहाड़ गरिजीम पर इबादत करते थे।

► क्या ईसा मसीह फ़रमाएगा कि वह अपनी क़ौम को छोड़ यरूशलम में इबादत करे?

एक बार फिर वह औरत को चौंका देता है। “ऐ खातून, यक़ीन जान कि वह वक्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में।”

ईसा मसीह कितनी महारत से औरत का रुहानी इलाज कर रहा है। पहले वह उसे ज़िंदगी का पानी पीने की दावत देता है। फिर वह अपनी रुहानी नश्तर से उसके गुनाहों का ज़ख्म खोल देता है ताकि वह सही भर सके। अब वह उसकी आँखें एक नई रुहानी हक्कीकत के लिए खोल देता है : खुदा की रुहानी परस्तिश के लिए।

रुह और सच्चाई से परस्तिश

► अगर न यरूशलम और न गरिजीम पहाड़ पर परस्तिश करनी है तो कहाँ करनी है?

ईसा मसीह फरमाता है, “वह वक्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हकीकी परस्तार रुह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे।”

- क्या इस परस्तिश के लिए किसी खास जगह की ज़रूरत है? नहीं।
- क्यों नहीं?

इसलिए कि यह परस्तिश रुहानी होगी। रुहानी इबादत हर जगह हो सकती है।

- हकीकी परस्तार किसकी परस्तिश करेंगे? खुदा बाप की परस्तिश। खुदा से रिश्ते की ज़रूरत है। बाप-बेटे का रिश्ता।
- तो हम किस तरह हकीकी परस्तिश करेंगे? रुह और सच्चाई से। वफ़ादारी के इस रिश्ते में झूठ की कोई जगह नहीं रहेगी।
- क्या झूठ आपकी ज़िंदगी से निकल चुका है?

मैं ही मसीह हूँ

औरत का दिल उछल पड़ता है। क्या यह वह है जिसके इंतज़ार में सब हैं?

उसकी तड़पती रुह कहती है, “मुझे मालूम है कि मसीह आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

अब ईसा मसीह सीधा उसे बताता है, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

नजातदहिंदा यही है

► औरत का क्या जवाब है?

उसमें इतना ज़ज़बा आता है कि वह घड़ा वहाँ छोड़ शहर में चली जाती है। अब वह किसी से नहीं कतराती बल्कि हर मिलनेवाले से कहती है कि “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?”

लोग शहर से निकलकर ईसा मसीह के पास आते हैं। न सिर्फ यह बल्कि उनमें से बहुत लोग उस पर ईमान भी लाते हैं। वह औरत से कहते हैं, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने खुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।”

► वह क्या जान लेते हैं?

कि ईसा मसीह दुनिया का नजातदहिंदा है। वह जो ज़िंदगी का अबदी पानी देता है। जो गुनाहों का इलाज करता है। जिससे इनसान का खुदा से रिश्ता बहाल हो जाता है और वह रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करता है।

इंजील, यूहन्ना 4:3-30,39-42

ईसा मसीह [...] यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला गया। वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था। चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूखार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याकूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। वहाँ याकूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तकरीबन बारह बज गए थे।

एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” (उसके शागिर्द खाना खरीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरখास्त कर सकते हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख्शिश से वाकिफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।”

खातून ने कहा, “खुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? क्या आप हमारे बाप याकूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो खुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उसके पानी से लु-त्फ़अंदोज़ हुआ?”

ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

औरत ने उससे कहा, “खुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

ईसा ने कहा, “जा, अपने खावंद को बुला ला।”

औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई खावंद नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सही कहा कि मेरा खावंद नहीं है, क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

औरत ने कहा, “खुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी

लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

ईसा ने जवाब दिया, “ऐ खातून, यक्कीन जान कि वह वक्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। तुम सामरी उसकी परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उसकी परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। लेकिन वह वक्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक्कीकी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करें।”

औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुर्त न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

[...]

उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, “उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।” जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।” चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।

और उसकी बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। उन्होंने औरत से कहा, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने खुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदाहिंदा यही है।”